Conclusion

`उपसंहार`

दृश्यमान् चराचर जगत यदि विधाता की सृष्टि है तो काव्य कवि की भावात्मक सृष्टि । जगत् का कोई भी कार्य सोद्देश्य होता है । कवि की काव्य-सृष्टि में भी यही सोद्देश्यता दृष्टिगत होती है । युगीन राजनीतिक,सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, साहित्यिक आदि सम-विषम परिस्थितियों से परिचालित मानव-समाज की आशा-आकांक्षाओं की पूर्ति परापूर्व से समाज के हितचिंतक मनीषी करते आये हैं । कवि भी मानव-समाज का उत्कर्षयुक्त हितचिंतन करने-वाला मनीषी , आर्षद्रष्टा, प्रतिनिधि एवं प्रेरणादाता है । साधारण कवि युगीन परिस्थितियों के वशीभूत होकर मानव समाज की आशा-आकांक्षाओं का भावांकन करता है किन्तु उदात्त कोटि का असाधारण कवि न केवल वर्तमान का चित्रण करता है, अपितु उसके स्वस्थ भावी निर्माण का हितचिंतन करता हुआ संप्रेरक रूप में उचित मार्गदर्शन भी देता रहता है । वह परिस्थितियों के वशीभूत नहीं होता किन्तु अचल-अटल योद्धा की तरह विषम परिस्थितियों से झूझता हुआ वह जलधि-दीप की तरह मानव-समाज का पथ प्रशस्त करता रहता है । पंडित सोहनलाल द्विवेदी के काव्य का सर्वांगीण अध्ययन-अनुशीलन करने के उपरांत यह कहा जा सकता है कि वे मानव-समाज के ऐसे ही हितचिंतक, प्रेरणादाता और राष्ट्र की युगीन विषम परिस्थितियों से अजेय योद्धा की तरह आजीवन झूझनेवाले कवि हैं ।

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् तथा तिलक के निधनोपरान्त महात्मा गांधी जी के सबल नेतृत्व में भारतीय राजनीति के सूत्र आते ही राजनीतिक स्तर पर चिंतन प्रक्रिया में आमूल परिवर्तन आने लगा । ब्रिटिश शासकों की अन्यायपूर्ण नीतियों के प्रति अहिंसात्मक चिंतन एवं दर्शन पर आधारित युद्ध प्रारंभ हो गया जिसके परिणामस्वरूप देश में शनैः शनैः नवीन चेतना का विकास होने लगा । यद्यपि इसके पूर्व सांस्कृतिक पुनर्जागरण के परिणाम स्वरूप धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक आदि क्षेत्रों में सुधारवादी चेतना जागृत हो चुकी थी । गोखले,लोकमान्य

तिलक जैसे नेताओं के प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप राजनीतिक स्तर पर भी ब्रिटिश शासकों के प्रति विरोधमूलक वातावरण निर्मित हो चुका था, तो साहित्यिक क्षेत्र में भारतेन्दु तथा महावीरप्रसाद द्विवेदी युगीन साहित्यकारों ने राष्ट्रीय जागरण को सम्यक् वाणी दी थी, तथापि स्वतंत्रता प्राप्ति के उक्त आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने का भगीरथ कार्य देश के सम्मुख उपस्थित था। संयोग से द्विवेदी जी की काव्य-यात्रा इसी संक्रांति काल से प्रारंभ हुई। अपने पैतृक संस्कारों अध्ययनकालीन राष्ट्रीय वातावरण के प्रभाव के कारण तथा महर्षि मालवीय जी एवं गांधी जी के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष संपर्क के परिणाम स्वरूप उनका जो समग्र व्यक्तित्व निर्मित हुआ उससे वे गांधीवादी चिन्तन की ओर आकृष्ट हुए और शनैः शनैः उसके दर्शन से प्रभावित हुए। यद्यपि ये किसी वाद में प्रतिबद्ध होना नहीं चाहते तथापि उन्होंने यह स्वीकार किया है, 'गांधीवाद की अपेक्षा निश्चित ही भारतमाता मेरे समक्ष प्रथम है। मैं किसी वाद के घेरे में बंधना नहीं चाहता। यह बात और है कि गांधी जी की नीति-रीति मुझे एकमेव ऐसी लगी जिससे राष्ट्र का कल्याण-अभ्युदय भारतीय पद्धति से सुगम है।'[१] इससे स्पष्ट है कि कवि की चेतना सदैव भारतमाता के प्रति रागात्मक सम्बंध स्थापित करती हुई उसके अभ्युदय की साधना करती रही है। तदर्थ भारतीय जलवायु एवं संस्कृति के अनुकूल माध्यम के रूप में गांधी जी की नीति-रीतियों को अपनाती रही। कवि तो स्वतंत्र चेता होता है। मानव-समाज की न्यूनतम चिनगारी भी कवि के मानस को उद्वेलित कर सकती है और तदनुसार स्पंदनशील कवि अपनी क्रिया-प्रतिक्रिया व्यक्त करता रहता है। तदर्थ यद्यपि द्विवेदी जी की अधिकांश रचनाओं में बापू के विराट व्यक्ति तत्व एवं कृतित्व से प्रभावित उनकी नीति-रीतियों में विश्वास करते हुए राष्ट्रीय समस्याओं का सुखद समाधान ढूंढने का प्रयास परिलक्षित होता है, तथापि राष्ट्रीय आंदोलन कालीन समानान्तर चलनेवाली आतंकवादी चेतना से भी प्रभावित होते हुए बलिवेदी भावना से परिपूर्ण घटना-प्रसंगों पर लिखित रचनाएँ भी प्राप्त होती हैं। एक ओर यतीन्द्रनाथदास के निधन पर शहीदों का 'फूलों भरा

जनाजा' उठाने की बात कहकर वे बलिवेदी भावना को उजागर करते हैं तो दूसरी ओर 'राणा-प्रताप' पर लिखित प्रसिद्ध रचना के द्वारा राष्ट्र की स्वाधीनता के लिये आत्म-समर्पण करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं । साथ ही वर्तमान नेताओं में एक ओर वे बापू, सरदार पटेल, जवाहरलाल नेहरू आदि के व्यक्तित्व से प्रभावित रचनाओं का सर्जन करते हैं तो सुभाषचन्द्र बोस की बलिदानी चेतना से प्रभावित होकर उनकी भी प्रशस्ति गाते रहते हैं । इससे स्पष्ट है कि कवि - भारतमाता के पारतंत्र्यकालीन कष्टों से व्यथित होकर स्वाधीनता-प्राप्ति और उसके कल्याण-अभ्युदय के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अधिक बेचैन है और उसके लिए प्रयत्नशील प्रत्येक व्यक्ति का स्वागत वे करते रहे हैं । मातृभूमि के प्रति अपनी अदम्य भक्ति-भावना प्रदर्शित करते हुए उन्होंने लिखा भी था,'मेरी इष्ट देवी एकमात्र राम, कृष्ण, तिलक, गोखले, गांधी की जननी भारतमाता है । मैं शत-शत जन्म धारण करके भी अपनी इष्ट देवी के ऋण से मुक्त नहीं हो सकता । मेरी लेखनी भारतमाता के वर्तमान और भविष्य की ही आराधिका है । मेरा जीवन और मेरी कलम भारतमाता की सेवा में ही समर्पित है ।' अत: मातृभूमि के अनन्य भक्त द्विवेदी जी की रचनाएँ राष्ट्रीय आंदोलन के उन तूफानी दिनों में असंख्य नवयुवकों की प्रेरणा स्रोत बनी रहीं ।

अपने पूर्ववर्ती मैथिलीशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्राकुमारी चौहान प्रभृति राष्ट्रीय कवियों की रचनाओं ने जन-मानस में अपने ढंग से क्रांति और विद्रोह का जो बीजवपन किया था, उसे माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारीसिंह दिनकर, पंडित सोहनलाल द्विवेदी आदि कवियों की रचनाओं ने पल्लवित और पुष्पित किया । मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं ने अतीत से प्रेरणा ग्रहण करते हुए राष्ट्रीय चेतना को उजागर करने का यत्न किया किन्तु अधिकांशत: उनकी चेतना सांस्कृतिक पुनर्जागरण से सम्बद्ध सुधारवादी रही । 'नवीन' जी ने अपनी रचनाओं के द्वारा राष्ट्रीय चेतना को उजागर अवश्य किया किन्तु राष्ट्रीयता की

दृष्टि से उनका प्रमुख स्वर विप्लववादी रहा । इधर रामधारी सिंह दिनकर की राष्ट्रीय रचनाएँ भी विद्रोहात्मक एवं युद्धवादी नीति का समर्थन करती रहीं । माखनलाल चतुर्वेदी की राष्ट्रीय रचनाएँ बलिदानी भावनाएँ लेकर 'मरण का त्यौहार' मनाती रहीं । यद्यपि इन सभी कवियों की चेतना युगपुरुष महात्मा गांधी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर समय-समय पर उनकी वैयक्तिक विशेषताओं का उद्घाटन करती रहीं, तथापि पंडित सोहनलाल द्विवेदी की राष्ट्रीय रचनाओं में बापू के विराट व्यक्तित्व का उद्घाटन और उसका युगव्यापी प्रभाव तथा बापू के द्वारा निर्दिष्ट राष्ट्र-निर्माणपरक कार्यक्रमों का जो सुनियोजित रूप दृष्टिगत होता है वह उनके पूर्ववर्ती एवं समकालीन कवियों की रचनाओं में उतने अनुपात में नहीं मिलता । उनकी समस्त रचनाओं की विषयवस्तु के संदर्भ में विचार करने पर यह कहा जा सकता है कि उनमें वस्तुगत वैभिन्न्य है । स्वतंत्रता पूर्व लिखित उनकी रचनाओं में युगीन संदर्भों में राष्ट्रीय जागरण, सांस्कृतिक सुधारवादी एवं राष्ट्र-निर्माण मूलक रचनाएँ प्राय: मिलती हैं, तथा स्वातंत्र्योत्तरकालीन रचनाओं में परिवर्तित युगीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में समाज की आशा-आकांक्षाओं की पूर्ति तथा नूतन राष्ट्र-निर्माणपरक रचनाएँ मिलती हैं ।

पूर्व कथनानुसार राष्ट्रीय आंदोलनकाल में स्वाधीनता प्राप्ति की जितनी व्यापक राजनीतिक चेतना उद्बुद्ध हो रही थी उतनी पूर्ववर्ती काल में नहीं हुई । स्वातंत्र्य प्राप्ति की इस युगीन आवश्यकता को युगधर्म समझकर पंडित सोहनलाल द्विवेदी राष्ट्रीय जागरण को अपने काव्य का विषय बनाते हुए एकान्त साधना में संलग्न हो गये । राष्ट्रीय स्तर पर जनता की चेतना को उजागर करने के लिए उन्होंने संभाव्य सभी प्रेरणा स्रोतों का उपयोग किया जिन पर उनकी राष्ट्रीय रचनाओं के अनुशीलन के अंतर्गत पूर्ववर्ती अध्याय में सविस्तर लक्ष्य किया जा चुका है। अतीत से प्रेरणा लेते हुए राणा-प्रताप, अशोक, शिवाजी आदि राजनीतिक नेताओं की बलिदानी चेतना को जन-समाज के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए उससे प्रेरणा

ग्रहण करने का संदेश देते रहे । साथ ही तुलसीदास, भगवान बुद्ध आदि की क्रांतिकारी चेतना को पुन: भारत में अवतरित होने की कामना व्यक्त करते हुए भारत के निजी गौरव को पुन: प्रतिष्ठित करने की जन-मानस में भावना जगाते रहे । इतना ही नहीं वर्तमानकालीन नेताओं के विशेषकर राष्ट्रीय आंदोलन के सूत्रधार महात्मागांधी जी के युगव्यापी, युगप्रवर्तक व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनकी नीति-रीतियों का समर्थन करते हुए द्विवेदी जी की लेखनी कर्तव्यशून्य, दिग्भ्रांत, स्वत्वहीन एवं उदासीन मनोवृत्तिवाले राष्ट्र के तरुणों में 'उत्तिष्ठ कौन्तेय' की आस्थावादी उदात्त चेतना जागृत करते हुए उनकी धमनियों में रक्त का पौरुषपूर्ण संचार करती रही । स्वातंत्र्य प्राप्ति के यज्ञ में वह तरुणों को सधिधावत् सोत्साह सम्मिलित हो जाने का पुन: पुन: उद्बोधन एवं आवाहन करती रही । यह उल्लेखनीय है कि कवि की इस अथक साधना में कहीं भी शिथिलता, उदासीनता एवं विध्वंसात्मक दृष्टिकोण परिलक्षित नहीं होता । उनका कवि सच्चे अर्थों में सत्याग्रही की भांति राष्ट्रीय सैनिक के रूप में देशभक्ति की मशाल लेकर लक्ष्य-प्राप्ति के लिए राष्ट्र की चेतना को उजागर करता रहा । मातृभूमि के रागात्मक चित्रों को उभारते हुए जनमानस में राष्ट्र-प्रेम की चेतना जागृत करते रहे । ऐसा करते हुए एक ओर उन्होंने अतीत के गौरवशाली घटना-प्रसंगों के चित्ताकर्षक रूप प्रस्तुत किये तो दूसरी पारतंत्र्यकालीन भारतमाता की वर्तमान दुर्दशा के भी अनेकविध चित्र उभारे और तरुणों को निजी कर्तव्यभान कराते हुए उन्हें राष्ट्र-कर्म में संलग्न होने की महती प्रेरणा प्रदान करते रहे । तरुणों के अतिरिक्त किसान-मजदूर आदि अधिकांश ग्रामीण जनता को भी युगीन आवश्यकतानुसार अपनी शक्ति का परिचय कराते हुए अपनी महत्ता को प्रतिष्ठित करने का अनवरत प्रयत्न करते रहे । इस तरह ग्रामीण जनता की चेतना भी जाग्रत करते रहे । इस तरह स्वातंत्र्यपूर्व लिखित उनकी रचनाओं में अनुपात की दृष्टि से अधिकांशत: राष्ट्रीय जागरण से ही सम्बद्ध रचनाएँ प्राप्त होती हैं ।

दूसरे प्रकार की रचनाओं में राष्ट्र-निर्माणपरक रचनाएँ मिलती हैं ।

जैसा कि पूर्ववर्ती अध्याय में निर्दिष्ट किया जा चुका है कि कवि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता का ही आकांक्षी ह नहीं है । वह सच्चे अर्थों में आत्म-निर्भर जन-समाज का निर्माण करते हुए स्वाधीनता प्राप्त करने की कामना करता है । द्विवेदी जी द्विविध उपायों से राष्ट्र-निर्माण करने का प्रयास करते दिखाई पड़ते हैं-(१)चरित्रगत राष्ट्र-निर्माण और (२) आर्थिक एवं सामाजिक पक्षों के उत्कर्ष के द्वारा राष्ट्र-निर्माण । कवि का दृढ़ मंतव्य रहा है कि राष्ट्र का चरित्र जितना उदात्त कोटि का होगा, उतना ही राष्ट्र दीर्घजीवी रहेगा । राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त हो जाने के उपरांत भी यदि राष्ट्र का चरित्र भ्रष्ट रहा तो उसकी अखंडता एवं सुरक्षा का भय उपस्थित हो जाएगा । उसे चिरस्थायी रूप प्रदान करने के लिए राष्ट्र के चरित्र को ऊंचा उठाना होगा । तदर्थ कवि ने `वासवदत्ता`, `कुणाल` तथा `विषपान` जैसी सांस्कृतिक रचनाओं का प्रणयन किया । इन रचनाओं की अंतर्निहित भावसृष्टि एवं चरित्रगत उदात्तता की राष्ट्रगत महत्ता पर पूर्ववर्ती अध्याय में सविस्तर अनुशीलन किया जा चुका है । साथ ही परंपरागत उदात्त जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा एवं राष्ट्रीय आंदोलन कालीन नवीन जीवन मूल्यों के विकास में कवि के योगदान पर भी विचार किया जा चुका है । कुल मिलाकर उक्त सांस्कृतिक रचनाओं एवं राष्ट्रीय रचनाओं के अंतर्गत यत्र-तत्र प्राप्त सांस्कृतिक रचनाओं के अनुशीलन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि द्विवेदी जी ने इन रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय चरित्र को उदात्त बनाने की दिशा में पर्याप्त प्रयास किया है । विषय-वस्तु की दृष्टि से ऐसी रचनाएँ राष्ट्रीय जागरण की रचनाओं के अनुपात में कम हैं। राष्ट्र-निर्माण के आर्थिक एवं सामाजिक पक्ष के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि एक ओर कवि ने सामाजिक रूढ़ियों एवं अंध-विश्वासों को दूर करने का सुधारवादी दृष्टिकोण से प्रयास किया है । हरिजनोद्धार जैसे युगीन आंदोलन से प्रभावित होकर कवि ने उसे सामाजिक स्तर प्राप्त हो इसलिए उसके मंदिर-प्रवेश पर सोचा है । शताब्दियों से दलित एवं कुचलित जन-समाज के आर्थिक उत्कर्ष के लिए एक ओर कवि ने कृषक एवं मजदूरों की चेतना को जगाते हुए उन्हें अथक परिश्रम करने की प्रेरणा एकाधिक रचनाओं के द्वारा देते रहे तो दूसरी ओर फुरसद के समय में

खादी तथा चरखा को अपनाते हुए आर्थिक वृद्धि का उपाय निर्दिष्ट करते रहे । खादी-गीत इसका प्रमाण प्रस्तुत करता है ।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर स्वातंत्र्यपूर्व लिखित कवि की रचनाओं का समग्रतया अनुशीलन करने पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि उनकी - अधिकांश रचनाएँ राष्ट्रीय जागरण से सीधा सम्बंध रखती हैं । वे अनवरत राष्ट्रीय-जागरण का शंखनाद करते हुए जन-समाज की चेतना को लक्ष्य-प्राप्ति के लिए जगाते रहे । इस दृष्टि से वे राष्ट्रीय जागरण के वैतालिक हैं । उनके इस प्रयास में ओज है, दीप्ति है, आक्रोश है किन्तु अन्य राष्ट्रीय कवियों की तरह विद्रोहमूलक दृष्टिकोण नहीं है । उसमें श्रद्धा, आस्था, उमंग एवं निर्माण का स्वर है जो गांधी निर्दिष्ट नीति-रीतियों से प्रेरित है और यही कवि को अपने पूर्ववर्ती एवं समकालीन राष्ट्रीय कवियों से दृष्टिगत भिन्नता प्रदान करता है । उनका राष्ट्रीय जागरण मूलक प्रयास एकांगी नहीं है, सर्वांगी है । एक ओर वे अतीत से प्रेरणा लेकर, वर्तमान के कष्टों से मुक्ति प्राप्त करने का तथा निर्माणमूलक भविष्य की लोकमंगलयुक्त कामना करने का सुनियोजित प्रयास करते हैं तो दूसरी ओर देश के तरुणों, प्रौढ़ों एवं बाल-मानस को जगाने का प्रयास करते हैं । तरुण ही तो राष्ट्र का सूत्रधार होता है । उसकी शक्तिमयी चेतना को उजागर करने पर आवश्यक क्रांति का निर्माण होता है । वही स्वाधीनता-प्राप्ति एवं राष्ट्र-निर्माण के लक्ष्य की पूर्ति में अधिकाधिक सहायक सिद्ध हो सकता है । तदर्थ कवि राष्ट्रीय जागरण से सम्बद्ध रचनाओं में तरुणों के उद्बोधन एवं आवाहन पर अधिक ध्यान केन्द्रित करते हैं । बाल-मानस से सम्बद्ध रचनाओं में भी राष्ट्रीय जागरण एवं निर्माण के भाव ही अधिक हैं । तत्सम पदावलीप्रधान उनकी कतिपय रचनाएँ देश के प्रौढ़-मानस के जागरण के निमित्त हैं जिनमें चिन्तनजगत गांधीमय है । साथ ही किसान एवं मजदूर जैसे दलित वर्गों की चेतना को भी उजागर करते हैं । इससे स्पष्ट है कि जागरण से सम्बद्ध उनकी रचनाएँ समाज के सभी वर्गों एवं विविध

मानसिक स्तरों के अनुकूल स्वर साधना करती रही हैं ।

स्वातंत्र्योत्तरकालीन रचनाओं का अनुशीलन करने पर यह कहा जा सकता है कि इन रचनाओं में विषयवस्तुगत वह वैभिन्न्य नहीं है जो स्वातंत्र्य-पूर्व की रचनाओं में दृष्टिगत होता है । स्वातंत्र्य-प्राप्ति के पश्चात् ~~की~~ नूतन राष्ट्र-निर्माण की जो समाजगत आशा-आकांक्षाएँ विद्यमान रहीं उनकी गांधी निर्दिष्ट मार्ग पर पूर्ति की युगीन कामनाओं को वाणी प्रदान की गई । साथ ही उसकी पूर्ति में व्यवधान उपस्थित करनेवाली शासनगत विकृतियों के प्रति सुधारवादी प्रहार भी इन रचनाओं में परिलक्षित किये जा सकते हैं । इनमें कवि अधिकांशत: चिन्तन-प्रधान रहा है जबकि स्वातंत्र्यपूर्व की विशेषकर जागरण से सम्बद्ध रचनाओं में कवि सीधी, सादी, सरल भावाभिव्यक्ति करता हुआ दृष्टिगत होता है । तात्पर्य यह कि युगीन आवश्यकताओं के अनुसार कवि कभी सरल तो कभी चिन्तन प्रधान भावाभिव्यक्ति करता रहता है । इस तरह कवि सर्वत्र अपने लक्ष्य की पूर्ति के उद्देश्यानुसार भावाभिव्यक्ति करता है । अत: उनका काव्य सोद्देश्य है।

द्विवेदी जी के काव्य के कला-सौष्ठव पर विचार करते हुए यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि उद्देश्यप्रधान उनकी रचनाएँ सीधी, सादी, सरल भावाभिव्यक्ति करती रहती हैं । भाव एवं प्रसंगानुकूल शब्द-चयन, वाक्य-रचना, अलंकार, बिंब व प्रतीकों का प्रयोग तथा छंद-योजना करते हुए कवि सहज अभिव्यक्ति में मानते रहे हैं । उनकी शैली भी भावानुकूल बदलती रहती है । जनवादी कवि होने के नाते जागरण एवं निर्माण से सम्बद्ध उनकी रचनाओं में शैली-परिवर्तन होता रहता है । जनवादी रचनाओं में सरस, मधुर शैली का प्रयोग करके तदनुसार शब्द-चयन एवं छंद-योजना के द्वारा नाद-सौंदर्य की सृष्टि करते हुए सरल अभिव्यक्ति की जाती रही है। जहाँ चिन्तनगत गांभीर्य प्रदर्शित हुआ है वहाँ संस्कृत की तत्सम पदावली का प्रयोग करके तथा तदनुसार छन्द-योजना करके भावाभिव्यक्ति की गई है । ओजगुण प्रधान

तथा संस्कृति के उदात्त गुणों के प्रदर्शन में उदात्त एवं ओज शैली को अपनाया गया है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि कवि अभिव्यक्ति पक्ष की अपेक्षा अनुभूति पक्ष को प्राधान्य देता हुआ अपने लक्ष्य की पूर्ति के निमित्त भावानुसार सहज-सरल अभिव्यक्ति करता रहा है, जो जनवादी कवि के लिए परम आवश्यक माना गया है। उसे भावों की शीघ्र संप्रेषणीयता से जितना अधिक लगाव रहता है, विविध बारीकियों से परिपूर्ण कलागत सशक्त अभिव्यक्ति के प्रति उतना नहीं। द्विवेदी जी का कवि इस सोद्देश्यता को सदैव ध्यान में रखता रहा है।

यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि द्विवेदी जी का कवि सुदीर्घ कालावधि तक काव्य-साधना करता रहा है। उनकी काव्य-यात्रा में आधुनिक हिन्दी काव्य के छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, नवगीतवाद आदि अनेक काव्यांदोलन हुए किन्तु इन आंदोलनों के प्रभावों से प्रायः असम्पृक्त रहकर अनवरत रूप से उनकी चेतना राष्ट्रीय काव्यधारा से सदैव संलग्न रही। किसी साहित्यिक वाद में प्रतिबद्ध हुए बिना राष्ट्र की स्वतंत्रता एवं उसके सम्यक् निर्माण की एकान्त साधना करती रही। उनकी काव्य-यात्रा का मध्यान्ह काल आधुनिक हिंदी कविता का छायावाद एवं प्रगतिवाद रहा है। छायावाद को एक शैली-विशेष मानते हुए छायावादी प्रगीत-शैली पर उन्होंने प्रयोग के रूप में 'चित्रा' तथा 'वासन्ती' जैसी रचनाओं का प्रणयन किया है, किन्तु इन रचनाओं का अनुशीलन करने पर यह कहा जा सकता है कि उनके ये गीत यद्यपि छायावादी कवियों, प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा आदि के गीतिकाव्यों की-सी भावात्मक एवं कलात्मक ऊंचाई की सीमा का संस्पर्श नहीं कर पाये हैं, तथापि उनका यह प्रयोग सर्वथा निरर्थक नहीं कहा जा सकता। संभवतः कवि का यह प्रतिपाद्य न होने से एक प्रयोग के रूप में ही अपना महत्व रखता है। प्रगतिवाद युगीन मार्क्सवादी चिन्तन से वे प्रभावित होते हैं किन्तु एक सीमा तक। यह उल्लेख किया जा चुका है कि दलित और पीड़ित

जनसमाज के प्रति करुणा एवं ममतापूर्ण सम्बंध रखते हुए उनके कष्ट-निवारण के मार्क्सवादी चिन्तन पक्ष से द्विवेदी जी की चेतना आकर्षित अवश्य हुई है और कार्लमार्क्स की प्रशस्ति भी वे गा लेते हैं, किन्तु समाजगत शोषण के उन्मूलन के निमित्त स्वीकार किये गये मार्क्सवादी विध्वंसात्मक मार्ग से वे सहमत नहीं होते और यहाँ वे गांधीवादी चिन्तन के अनुसार शोषणवृत्ति का उन्मूलन पसंद करते हैं। अर्थात् साधनगत शुद्धि में वे विश्वास करते हैं।

द्विवेदीजी के काव्यगत कला-सौष्ठव पर प्रबंध के नवम अध्याय में जो विश्लेषण किया गया है उसके आधार पर युगीन शिल्प के आयामों के सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि द्विवेदी जी का कवि छायावाद, प्रगतिवाद आदि काव्यगत वादों के शिल्प-विधान के व्यामोह में कभी रुचि नहीं रखता है। जैसा कि स्पष्ट है, उनका कवि अपने लक्ष्य की पूर्ति के निमित्त एकान्त-साधना में रत है। जनवादी कवि कलागत शिल्प-विधान की अपेक्षा विषयवस्तुगत सहज-सरल संप्रेषण को ही प्राधान्य देता है। उनका कवि सदैव शब्द-चयन, वर्ण-संघटन, बिंब, प्रतीक, अलंकार, छंद आदि की योजना भावानुसार करता रहता है। उनकी शब्द-संपदा तथा उसके उचित प्रयोग एवं छंद-वैविध्य उनके अभिव्यक्ति कौशल को गरिमा प्रदान करता है। भाव और भाषा का जो सहज सामंजस्य परिलक्षित होता है वह अनुपम है। निजी प्रकृति की सरलता भी काव्यात्मक अभिव्यक्ति में प्रायः सु सर्वत्र प्रभ प्रतिभासित होती है। भावों की सहज-सरल अभिव्यक्ति होते हुए भी उनका काव्य- शिल्प अनूठा है। भावानुसार उचित शब्द-प्रयोग और प्रभावोत्पादकता में कवि सिद्धहस्त लगते हैं। भावानुसार पद-रचना की सरस, मधुर शैली में कवि अपना कथ्य बड़ी सुचारुता से कह जाता है। ओजगुण प्रधान प्रसंगों में कवि ने उदात्त शैली अपनायी है। इस तरह प्रसंगानुकूल शैली में परिवर्तन करके भावानुभूति का प्रभावोत्पादक ढंग से सहज संप्रेषण कवि की शिल्पगत विशेषता है।

द्विवेदी जी के काव्य का सर्वांगीण अध्ययन-अनुशीलन करने पर सहज ही इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि वह राष्ट्रीय जागरण व निर्माण का काव्य है। राष्ट्रीय जागरण ही उनकी कविता का प्रमुख स्वर रहा है। विशुद्ध मानव-प्रेम के धरातल पर आधृत गांधीवादी दृष्टि एवं दर्शन को संजोये हुए वह उदात्त जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा का काव्य है। अत: उनके काव्य में कुण्ठा, घुटन या घृणा का भाव नहीं है, उसमें है स्वस्थ अहिंसावादी चिन्तन एवं जीवन - दृष्टिकोण, आशा-आकांक्षा, आस्था और विश्वास, लक्ष्य-प्राप्ति की तड़पन एवं नव-निर्माण मूलक लोकमंगल की भावना। उनका काव्य मातृभूमि के प्रति रागात्मक चेतना से परिपूरित देश-प्रेम की बलिदानी भावना का काव्य है। आपत्कालीन परिस्थितियों में राष्ट्र को सशक्त संबल की प्रेरणा का काव्य है। उनका काव्य युग-सापेक्ष होते हुए भी निर्माणमूलक प्रयास उसे युग निरपेक्ष बनाते हुए उसमें चिरन्तनता उत्पन्न कर देता है। आज भी वह उसी प्रेरणा की शक्ति लिये हुए है। तदर्थ वे युग कवि एवं राष्ट्र कवि भी हैं। गांधीवादी चिन्तन के कारण विकसित निराभिमानता, निर्भीकता, निरीहता, आत्मानुशासन जैसे-के जैसे कवि के विरल वैयक्ति गुणों का भी प्रतिबिंब उनके काव्य में झलकता है, अत: उनका काव्य सहज-सरल भावाभिव्यक्ति का काव्य होते हुए भी एक विशिष्ट गांभीर्य लिए हुए सोद्देश्य काव्य है। अत: राष्ट्रीय काव्यधारा के परिप्रेक्ष्य में उसे जागरण व निर्माण के लिए सशक्त अभिव्यक्ति एवं संबल का काव्य कहा जा सकता है।

--

सन्दर्भ- सूची :

१- श्री हरिप्रसाद शुक्ल(मधुकर), 'प्रेरणा के अनन्त स्रोत' (लेख)
द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ, पृ० १४८

--